आसान नहीं पुरुष होना

शर्मा साक्षी चंद्रशेखर सरिता
फोन : 7498488709
मेल : sharmasakshi9828@gmail.com

आसान नहीं पुरुष होना...
आसान नहीं पुरुष होना,
क्योंकि पुरुष की भावनाओं पर कविताएँ नहीं पढ़ी जाती है,
चोट लगने पर उन्हें रोने का अधिकार नहीं होता है,
जवान होने के बाद उन्हें घर बैठने की सुविधा नहीं होती है,
और बाहरी दुनिया के तमाम उलझनों में उलझे होने के बावजूद भी ,
घर आकर उन्हें अपने चेहरे पर हसीं रखनी पड़ती है,
उनके "कुछ नही" कहने पर उन्हें बार बार "क्या हुआ?" पूछने वाला कोई नहीं होता,
और उनके व्यक्तित्व की पहचान उनके पगार से होती है।
आसान नहीं पुरुष होना,
क्योंकि खुद रूठा होकर भी दूसरों को मनाना आसान नहीं होता,
अपने सपने तोड़ कर पिता का सहारा बनने के लिए छोटी उम्र में घर की
जिम्मेदारियाँ अपने सिर ले लेना आसान नहीं होता,
दूसरों के आंसू न बहें इसलिए खुद अपने आंसू छिपा लेना आसान नहीं होता,
और अपनी पूरी कमाई परिवार पर खर्च कर अपने लिए एक घड़ी तक न लेना आसान नहीं होता।
आसान नहीं पुरुष होना,
क्योंकि अपने परिवार को पालने के लिए उनसे ही दूर रहना आसान नहीं होता ,
मां तो रो लेती है दुख में पर यह हुनर पिता में नहीं होता,
टूट कर बिखर जाने पर भी बिना आंसू बहाएँ सब सहन कर लेना आसान नहीं होता,
त्योहार पर सबके लिए नए कपड़े खरीद कर खुद पुरानी शर्ट पहन कर सुखी रहना
आसान नहीं होता,
और सब कुछ ठीक न होने पर भी सब कुछ ठीक होने का अभिनय करना आसान नहीं होता।
हर लड़की कहती है "काश मैं लड़का होती।" कहती है ,
क्योंकि पुरुष की समस्याओं को अभी तक पन्नो पर नहीं उतारा गया है ।
इसलिए हम क्या जाने की पुरुष होना भी आसान नहीं होता।
भले हूं मैं स्त्री वादी,

भले हूं मैं स्त्री वादी,
और जानती हूं कि हमने कितना कुछ भोगा है ,
पर आज यह कहना की पुरुष होना क्या बड़ी बात है?
मेरे लिए आसान नहीं।
क्योंकि सचमुच आसान नहीं पुरुष होना
क्योंकि सचमुच आसान नहीं पुरुष होना...।